

✓
Accelerated
19th Nov. 90
19th Nov 1990
A

आदरणीय रत्ना साहेब,
सादर चरण स्पर्श,

मेरी प्रदर्शनी के ठीक एक माह पूर्व यह पत्र चिंताग्रस्त
देश के नए प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखरजी शपथ ले चुके हैं।
समगम भूमि, मंडल आयोग, आरक्षण, रथयात्रा आदि

अनेक चिंताएँ।

इसी बीच प्रदर्शनी की चिंता केरलोग कि चिंता।
स्लाइड्स रिवंचवाना छपवाना आदि अनेक कार्य आप जानते
ही हैं नए लोगों को ऐसी न जाने कितनी परेशानी
का सामना करना पड़ता है।

इसी बीच भारत भवन की चिंता। स्वामीनाथन दिल्ली।
अशोकजी का तबादला ग्वालियर राजस्व मंडल में।
पत्नी ने अपनी भारत भवन की नौकरी छोड़ दी।
बल्कि छुड़वा दी गई। 'स्वामी कृपा'
अब जो लेना है ले जाए।

आदि अनेक
कल अशोकजी का काव्यपाठ या मध्यप्रदेश कला परिषद् में
'अद्भुत' लगातार डेढ़ घंटे के काव्य पाठ में।

बल्कि "पुनरवलोकनी काव्य पाठ" में
"माँ मैं जब लौटकर आऊँगा" से लेकर "कैसे कहें"
तक कोई साठ कविताएँ सुनाई
जिसमें इन्हीं पिछले दिनों में लिखी गई गद्य
कविताएँ एक उपलब्धि हैं।

मेरे जीवन का बल्कि वहाँ उपस्थित कई स्रोतों
का एकमात्र अनुभव होगा इतने लम्बे ^{एकल} काव्य पाठ का।
कल की शाम अनुभव की शाम थी।

आपके पत्र और केटलॉग के आलेख के इंतजार में

आपका

—।।।।।।।।।।

अखिलेश ११ नवंबर १९९० को ओपाल से।